Why 5E ?

Education – Employability – Efficiency – Empathy – Ethics

5E is a lifetime roadmap for all round performance and pleasant life.

==========

१. एडुकेशन (शिक्षा) (Education : connects with world)

मानव जीवन की बुनियादि आवश्यकताएँ रोटी, कपडा, मकान को दिलवाने के साथ-साथ शिक्षा हमें ऐसे नागरिकों के रूप में उभारती है जो हमेशा समाज की सुरक्षा एवं विकास के लिए कार्य करते हैं। शिक्षा के कई उद्देश्यों एवं लक्ष्यों में प्रथम है - लक्ष्य साधना की राह में परिश्रम की आदत डालना। विद्यार्थी दशा में कई विषयों को आत्मासात करते हुए विजय प्राप्त करना और दूसरों की लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग देना चाहिए। समय का पालन, अनुशासन, विनय, संस्कार, भिन्न अभिप्रायों और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहन शक्ति का प्रदर्शन करना, माता-पिता और बड़ों के प्रति आदर का भाव और उनकी सेवा के लिए हाथ बढ़ाना आदि गुणों को समाज उत्तम विद्यार्थियों के लक्षण मानता है।

२. एंप्लायबिलिटी (रोज़गार) - Employability: Productivity for self and nation

शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्यों में एंप्लायबिलिटी (रोजगार) भी एक माना जाता है। इसका तात्पर्य है कि शैक्षिक योग्यताओं के अनुसार व्यवसाय को चयन करने

की कुशलता एवं क्षमता का विकास करना और उस व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने की नींव ड़ालना। शिक्षा का output measurement (आउटपुट माप) अच्छे अंक पाना या रैंक्स प्राप्त करना हो सकता है, किन्तु outcome measurement (परिणाम माप) तो एंप्लॉयबिलिटी (रोज़गार) प्राप्त करना ही होता है। इसमें पहली सीढ़ी है - अपने विषयों पर conceptual-understanding (संकल्पनात्मक समझ) और भावाभिव्यक्ति। अर्थात् हमने जिन-जिन विषयों को सीखा, उन विषयों का ज्ञान हमारे मित्रों या सहपाठियों को सरलता से आत्मसात करवाना। एंप्लॉयबिलिटी (रोज़गार) प्राप्त करने की दिशा में तार्किक विचारों (Logical thinking), गहन सोच (Critical thinking), वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सीखे गए अंशों को विविध संदर्भों में उपयोगी क्षमता एवं सृजनात्मक परिष्कारों का प्रतिपादन करने योग्य विश्वास का विकास कर लेना चाहिए।

यह अत्यंत आवश्यक है कि पाठशाल या कॉलेज के स्तर पर ही बच्चे एंप्लॉयबिलिटी(रोज़गार) का अवलोकन करना और उस दिशा में प्रयत्न करना चाहिए।

३. एफीशियन्सी (दक्षता) - Efficiency : More with less

किसी भी क्षेत्र में जहाँ तक हो सके कम साधनों के द्वारा ज्यादा से ज्यादा output प्राप्त करने के लक्ष्य होते हैं। इसके लिए हर कार्य के लिए मूल्य, समय, गुणवत्ता (Cost, Time, Quality) पैरामीटर्स के लिए आयाम (Metrics) निर्देशित कर उचित प्रणाली, डिज़ैनिंग, मॉनिटरिंग, रिपोर्टिंग से कुशलतापूर्वक पूर्ती करने का विचार और ओरियंटेशन बाल्य दशा से ही अपनाना चाहिए। उसी प्रकार हर कार्य में तकनीकी साधनों का प्रयोग करने का प्रयत्न यथा संभव करते रहना चाहिए। इन्नोवेटिव सोल्युशन (अभिनव उपाय) प्राप्त करना और customer satisfaction प्राप्त करना एक वैल्यू सिस्टम के रूप में अपनाना चाहिए।

४. एंपती - Empathy : Thinking from other angle

हम एक क्षेत्र में प्रवीणता पाकर विशेषज्ञ बनने के बाद हमारे साथ चलने वाली टीम को भी सहयोग देकर हमारे स्तर तक लाने का प्रयास करना चाहिए। नेताओं (Leaders) का मुख्य लक्षण और भी नेताओं को तैयार करना। एंपती

का अर्थ है - हमें दूसरों के स्थान पर रहकर सोचना और प्रतिक्रिया करना। इस विशाल भावना को बाल्य दशा या विद्यार्थी दशा से ही आचरण करें तो जीवन उन्नत शिखरों तक पहुँचना ही नहीं, अपने साथियों के सामने आदर्श प्रस्तुत कर, जीवन सुख-शांति से आगे बढ़ाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

५. एथिक्स - Ethics : Way of life

नैतिकता जीवन की रीढ़ एवं रक्षाकवच है। समाज में हर व्यक्ति को नैतिकता का आचरण एक सामाजिक तथा प्राथमिक कर्त्तव्य के रूप में करना चाहिए। हमारी अभिवृद्धि में पहला आयाम नैतिकता होनी चाहिए। जिस अभिवृद्धि में नैतिकता का अभाव हो, वह किसी भी समय या काल के लिए नष्टदायक है। विद्यार्थियों को इस विषय में सचेत करना चाहिए। हमारे द्वारा आरंभ किये गये हर कार्य धर्मबद्ध है या नहीं, समाज के हित में है या नहीं सेल्फचेक करलेना चाहिए। जितना आवश्यक अकॉदमी एक्सलेन्स है, बिहेवियर अण्ड एथिक्स एक्सलेन्स भी उतना ही आवश्यक है। इस बात का बच्चों के मन में गहरा प्रभाव पड़ना चाहिए। नैतिकता हमारे जीवन की विधि या चाल-चलन बन जानी चाहिए।

''नीति मार्ग ही तुम्हारी रक्षा।''